विचार बिन्दु

बुद्धि के सिवाय विचार प्रचार का कोई दूसरा शस्त्र नहीं है, क्योंकि ज्ञान ही अन्याय को मिटा सकता है।

–शंकराचार्य

निर्धनता में जिया निर्धन ही हमें सही नेतृत्व देता है

पूरे शीर्षक का विलोम यह है कि संपन्नता में जिया, संपन्न व्यक्ति हमें सही नेतृत्व नहीं दे सकता। यह कथन कोई नवीन आविष्कार नहीं है, बल्कि अनुभव जन्य अनेक उदाहरणों का निष्कर्ष है। रिसर्च में आविष्कार तो कभी ही होता है याने पूर्णतः नवीन ज्ञान जो पहले नहीं था। सामान्यतः तो रिसर्च में पुनः खोज ही होती है–शोध होती है, शोधन होता है। वह तथ्य ज्ञात भी हो सकता है पर उसे प्रचार–प्रसार नहीं मिल पाता, गहराई में जाकर उस तथ्य को या जानकारी को सतह पर लाया जाता है। अपने अपेक्षाकृत निर्धन देश में स्वतंत्रता के बाद का समय संभवतः यही सिखाता है कि हमारे निर्धनता में जन्मे नेता जो निर्धन ही रहे, हमें सही नेतृत्व व न्याय दे पाये हैं। अधिकांशतः संपन्न व्यक्ति की सँवेदनाएँ समाप्त हो जाती हैं। जिस वेदना को उसने न सहा हो, न भोगा हो उसे अनुभव करना अपवाद ही हो सकता है। जिस व्यक्ति ने अपने जन्म से न ग़रीबी देखी हो, न भोगी हो, वह उसे समझ ही नहीं सकता। इस देश के ग्राम्य जीवन को जिसने भोगना तो दूर, निकट से देखा तक न हो, वह उसे समझ ही नहीं सकता।

कच्चे घरों व झुग्गी झोपड़ियों में रहने वालों को छोड़िये, हमारे देश में तो खुले आकाश के नीचे नंगे, अधनंगे लोग भी रहते हैं। परिवार पलते हैं, प्रसव होते हैं, पालन–पोषण होता है। वहीं बालपन बीतता है, युवावस्था भी आती है और बुढ़ापा भी। मौत भी आ जाती है, अचानक कभी भी। दवा–दारू व उपचार के नितांत अभाव में कहीं बिलखता बालक, कहीं तड़फता युवा और कहीं असहाय बुढ़ापा अभी भी देखा जा सकता है। क्या संपन्न व्यक्ति कभी उस हाल में रहा है, यदि नहीं तो वह उसे मात्र देखता भर है, कुछ तो देख भी नहीं पाते, मात्र देखने का ढोंग करते हैं। पशुओं के ही नहीं स्वयं के चारों ओर मल–मूत्र और कीचड़ की सड़ांध में पलते कीड़े–मकोड़ों की तरह जीते हैं। अपने ही शहरों में आज भी सड़क के किनारे कड़कड़ाती सर्दी में मज़दूर के नवजात भूखे–नंगे शिशु को, कपड़े की झोली में झुलाते–बहलाते देखा है। क्या संपन्न व्यक्ति ने उस अनुभव को भोगा है, भोगा न सही, क्या उसे निकट से अनुभव किया है। सिनेमा व नाटक में अभिनय को देखकर उसकी सहानुभूति एक अस्थायी भावना मात्र है जिसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं होता।

लेखक की पीढ़ी के जो लोग हैं वे जानते हैं कि सड़क, पानी–बिजली के बिना ग्राम्य जीवन कैसा था। बरसात में केलू सँवारे जाते थे, गाँव में खजूर का पंखा था और गीले तौलिये का एयर कंडीशनर। मोबाइल फोन टी.वी., कम्प्यूटर कुछ भी नहीं था। वाहन के नाम पर खुद के पाँव, बैलगाडी, घोड़ा, ऊँट थे। शुद्ध मिट्टी, पानी, हवा तो थे मगर कीचड़, गंदगी तो थे ही, धूल भी उड़ती ही थी।

भारत के ग्राम्य जीवन व गरीबी की झलक इस कारण वर्णित है कि क्या हमारे नेता उस जीवन को जीकर निकले हैं। क्या उन्होंने कठोर परिश्रम कभी किया है यदि नहीं तो आज वे सफल नेता नहीं हो सकते। हाँ आज उन्हें सपन्न नहीं होना चाहिये अन्यथा गरीबी याद नहीं रहती।

छोटे–छोटे स्तरों पर भी वही बात लागू होगी जो बड़े स्तर पर लागू होती है। सामानंतर हमारे शीर्षस्थ नेता प्रधानमंत्री होते हैं। इनमें गरीबी देखे प्रधानमंत्री भी है और सम्पन्नता में जिये प्रधानमंत्री भी। प्रधानमंत्री नेहरू, राजीव गाँधी और श्रीमती इंदिरा गाँधी संपन्नता में जिये थे। नरसिंहा राव भी अपेक्षाकृत संपन्न रहे थे। इन सभी ने बड़े–बड़े काम किये। पं. नेहरू ने भाखड़ा नांगल जैसे विशाल बाँध, दुर्ग–भिलाई जैसे स्टील के कारखाने, इसरो, आइ.आइ.टी., आइ.आइ.एम. आदि अनेक कल कारखाने व संस्थान प्रारंभ किये। श्रीमती गाँधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण, प्रिवी पर्स की समाप्ति, बांग्लादेश का निमार्ण आदि कार्य संपन्न किये। राजीव गाँधी ने देश में कम्प्यूटर का प्रयोग प्रारंभ किया। नरसिंहराव ने उदार आर्थिक नीति अपनाई जिसमें उनके वित्तमंत्री मनमोहन सिंह (जो बाद में प्रधानमंत्री भी रहे) का भी योगदान रहा। कई अन्य प्रधानमंत्री भी रहे, परंतु, या तो वे अल्पकालिक थे या अंतराल को भरने की प्रक्रिया में रहे। इन सभी का योगदान भारत के विकास में सदैव याद रहेगा। परंतु यह भी सत्य है कि ये सभी गाँव के किसान–मज़दूरों की व्यथा नहीं दूर कर पाये। गाँव की गंदगी की तरफ इनका ध्यान कम गया। देश में पक्षपात रहित समाज की तरफ ध्यान कम गया जो प्रारंभ से ही नासूर बन गया। प्रमुखतः औधोगीकरण की तरफ ध्यान केन्द्रित रहा। अन्य प्रधानमंत्री भी इसी धारा में बहे।

> **अनेक बलिदानी नेताओं का, शहीदों का उल्लेख नहीं हुआ है क्योंकि इस लेख का उद्देश्य प्रमुखतः निर्धन नेता के नेतृत्व की चर्चा करता था। परंतु नेता जी सुभाष बोस का निस्वार्थ अमर बलिदान तो स्मरण करना ही होगा। महात्मा गांधी ने तो अपना उत्तरार्द्ध जीवन एक संत महात्मा, एक फ़कीर की भांति जिया।**

कुछ प्रधानमंत्री पूर्णतः ग्रामीण परिवेश से आये थे, इनमें लालबहादुर शास्त्री, अटल विहारी वाजपेयी, व नरेन्द्र मोदी प्रमुख हैं। अटल जी उस गांव के मूल निवासी हैं जहाँ मानव को कठिनतम परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता था। भीषण गर्मी व सर्दी, बाढ़ से ग्रस्त ग्राम्य जीवन था। गहरे कुओं से पानी मिलता, और कठोर परिश्रम से जीविका चलती। ग्राम्य जीवन की सभी विषमताओं से जूझता वह गाँव था बटेश्वर (वाया बाह) जिला आगरा, उत्तर प्रदेश। गाँवों में आवागमन के साधन नहीं थे अतः उन्होंने सड़कों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया। जगमगाते राष्ट्रीय राज्य मार्ग उनकी सोच की देन है। हमारे देश को सारा विश्व एक दुर्बल देश मानता था तो पोकरन में परमाणु बम विस्फोट कर यह भ्रम मिटाया। राष्ट्रभाषा हिंदी को बल दिया। उनसे भी पूर्व लाल बहादुर शास्त्री भी गरीबी से निकले थे। पढ़ने हेतु तैरकर जाते थे, कभी–कभी नाव के किराये के पैसे भी नहीं होते थे। दुर्भाग्य से उनका निधन शंकास्पद परिस्थिति में ताशकंद में हो गया। उन्होंने जय जवान–जय किसान का नारा देकर देश की सेना व किसान को सशक्त बनाया और पाकिस्तान को शिकस्त दी। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अति निर्धन परिवार से निकले। यही कारण है कि वे इस देश की आम गरीब जनता की नब्ज को समझते हैं। वे कई कार्य जो स्वतंत्रता के ठीक बाद हो जाने चाहिये थे, कर पाये हैं। उनके कार्य देश की एकता और अखण्डता, समृद्धि एवं सफलता, समानता एवं एक रूपता की दिशा में हो पाये हैं।

एक शर्त और है हमारा नेता निर्धनता भोगा हुआ तो हो ही, वह कालांतर में अकूत सम्पत्ति का यदि स्वामी हो जाता है तो फिर उसका नेतृत्व स्वार्थ से प्रेरित हो जाता है। पंच से लेकर मंत्री, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री पर संपत्ति संग्रह के आरोप लगते रहते हैं। यूँ तो विपक्ष प्रत्येक नेता को आरोपित करता है परंतु कुछ नेताओं पर तो वह प्रत्यक्ष प्रमाणित दिखाई देता है। इसका कारण सत्ता लिप्सा, संपत्ति लिप्सा, दलीय स्वार्थ व खर्चीले चुनाव बन जाते हैं। अतः आवश्यक है कि निर्वाचन व्यवस्था ऐसी हो कि निर्धन भी चुनाव लड़ सके और निर्धन रह कर भी देश का नेतृत्व कर सके। शास्त्री जी, अटल जी योगी तथा मोदी ऐसे ही नेताओं में से हैं जो निर्धन थे व निर्धन रहे या हैं। कुछ अन्य पक्ष विपक्ष के नेताओं ने भी निर्धन परिवार से आने, निर्धन रहने, अथवा निरंतर पूर्ववत रह कर ख्याति अर्जित की है निर्धनता से उठकर नेतृत्व देते रहने और सफल रहकर उत्कर्ष पाने वाले कई नेता हैं, परंतु बाद में उनके पास अकूत सम्पत्ति आ गई और निश्चय ही उनके नेतृत्व की धार कुंठित हो गई। धन–बल, बाहुबल के आधार पर उन्होंने भले ही अपना वर्चस्व कायम रखा हो परंतु एक ईमानदार, निष्ठावान नेता की उनकी छवि नहीं रह पाई। प्रारम्भ में और बाद में कुछ समय तक वे भले ही छाये रहे हों परंतु एक सर्वमान्य जननायक के रूप में उनकी छवि नहीं रह सकी, अथवा नहीं रह सकेगी। सारांश यह है कि वही नेता देश को सही नेतृत्व दे सकता है जो देश को हर दृष्टि से समझता हो और नेतृत्व दे सकता है जो देश को हर दष्टि से समझता हो और नेतृत्व के कारण संपन्नता अर्जित न करे। निश्चय ही निर्धनता को जीने वाला, भोगने वाला, जो निर्धनता के दंश को उसके सभी रूपो में देख चुका हो, वही देश को सही नेतृत्व व सही न्याय देने में अधिक सफल रहकर अनंतकाल तक देश के इतिहास में जननायक, राष्ट्रनायक कहलाने का अधिकारी रहता है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। विश्वास किया जा सकता है कि महात्मा गाँधी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. अबदुल कलाम व पूर्व उप प्रधानमंत्री सरदार घटेल भी इसी क्रम में सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

अनेक बलिदानी नेताओं का, शहीदों का उल्लेख नहीं हुआ है क्योंकि इस लेख का उद्देश्य प्रमुखतः निर्धन नेता के नेतृत्व की चर्चा करता था। परंतु नेता जी सुभाष बोस का निस्वार्थ अमर बलिदान तो स्मरण करना ही होगा। महात्मा गांधी ने तो अपना उत्तरार्द्ध जीवन एक संत महात्मा, एक फ़कीर की भांति जिया। न्याय सभी भांति समर्थ एवं अत्यंत लोकप्रिय होने के उपरांत भी उन्होंने कोई पद ग्रहण नहीं किया। हमारे राष्ट्र नायकों, जन नायकों को, स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों को कृतज्ञ राष्ट्र का कोटिशः नमन।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

मानव जीवन के कुछ रहस्य और उनको प्रकट करता विज्ञान

प्रो. डॉ. वीर बहादुर सिंह

> ■ **आंखों से स्वादिष्ट खाद्य वस्तु देखकर मुहं में लार बनना, काँटा या सुई चुभने पर उसकी खबर मष्तिष्क को सेकंड के सूक्ष्यतम समय में लगना रहस्य ही है**

मानव जीवन बड़ा रहस्यमय है ज्रीवन के उद्गम से लेकर विकसित होकर शरीर रूप धारण कर लेता है। शरीर के विकास के साथ ही शनैः शनैः स्त्री के शरीर में भी अनेक बदलाव होते हैं। जिनमें स्तन ग्रंथिओं की वृद्धि ,उनमे दूध संश्लेषित करने वाले ऊतकों और दूध नलिकाओं का विकास प्रमुख बदलाव हैं। दूध संश्लेषित करने वाले ऊतकों को अल्विओली कहते हैं। परन्तु इनमे दूध बनाने की प्रक्रिया गर्भकाल के 16 सप्ताह उपरांत कुछ कुछ आरम्भ हो जाती है परन्तु शिशु के जन्म लेते ही दूध निर्माण द्रुत गति से होने लगता है। इसका मुख्य कारण होता है कुछ नलिकाविहीन ग्रंथिओं के स्त्राव जिनको हॉर्मोन कहते हैं, का प्रभाव। मष्तिष्क में उपस्थित एक छोटी मटर के दाने के आकार की एंटीरियर पिट्यियूटरी ग्रंथि अपने हॉर्मोन द्वारा प्रजनन तंत्र पर वांक्षित स्त्राव स्त्रावित करने का प्रभाव डालती है।

स्त्री की ओवरी (अंडाशय) से स्त्रावित होने वाले हॉर्मोन के नाम हैं ; एस्ट्रोजन ,प्रोजेस्ट्रोन। वहीं एक और पिट्यूटरी ग्रंथि का हॉर्मोन प्रोलैक्टिन भी दूध स्त्रवन अथवा निर्माण के लिए उत्तरदायी होता है। ये सभी हॉर्मोन दुग्ध ग्रंथिओं की वृद्धि और उनमें दूध निर्माण की क्रिया में सहायक होते हैं। शिशु जन्म उपरान्त दूध का स्त्रावित होना आरम्भ हो जाता है जो प्रोलैक्टिन हॉर्मोन और प्रोजेस्ट्रोन के सम्मिलित प्रभाव से ग्रंथिओं में संश्लेषण शिशु के दूध पीने तक की अवधि तक जारी रहता है। इसको जारी रखने में कार्पस लुटेम से स्त्रावित प्रोजेस्ट्रोन हॉर्मोन की सक्रियता होती है। रक्त में अधिक प्रोजेस्ट्रोन की मात्रा से ही स्त्री शिशु को दूध पिलाने की अवधि में गर्भित नहीं होती।

विज्ञान ने एंडोक्रिनोलॉजी और फिजियोलॉजी के क्षेत्रों में सतत अनुसंधान से गर्भकाल और उसके पश्चात् दुग्ध स्त्रवण काल के लगभग सभी रहस्यों को समझ लिया है। होर्मोनस सभी ग्रंथिओं द्वारा सीधे रक्त में छोड़ दिए जाते हैं। इनको ले जाने के लिए कोई नलिकाएं नहीं होती। रक्त से ही शरीर में फैल कर जहाँ उनका कार्य होता है वही आघात करते हैं अन्य जगह नहीं। यह है कमाल उस रचियता का जिसने देह का निर्माण किया।

मानव शरीर में दूसरा प्रमुख संस्थान पाचन प्रणाली का है। लगभग 30 फ़ीट लम्बी पाचन प्रणाली में आमाशय, यकृत, पित्ताशय, छोटी आंत, बड्री आंत (कोलोन), और मलाशय मुख्य अंग हैं जो प्रणाली में एक के बाद दूसरे से जुड़े प्रतीत होते हैं। संसथान तो एक ही है परन्तु ऊतकों के विभेदन से सभी अंगों के अलग–अलग कार्य हैं विभिन्न प्रत्यंगों में पाचन भी भिन्न भिन्न एन्ज़ायमों द्वारा होता है। इन क्रियाओं में किसी भी एंजाइम का अन्य किसी से कोई अंतर्द्वंद नहीं होता, एक ही समय सभी उपस्तिथ एंजाइम अपने विशिष्ट खाध अवयव पर ही क्रिया करते हैं।

भोजन को शनैः शनैः संस्थान में आगे भेजने के लिए आँतों की क्रिया को पेरिस्टॉलसिस मूवमेंट /गति कहते हैं। परन्तु आँतों की यह गतिशीलता किस कारण होती है? मुझे नहीं मालूम। मेरे विचार से आँतों में ऐसी भोजन को आग धकेलने वाली गति गर्भ काल में ही आरम्भ हो जाती है। लेकिन इसको आरम्भ करने और जीवन पर्यन्त जारी रखने का कार्य किस कारण होता है? इसका रहस्य भी मुझे पता नहीं। आँखों से स्वादिष्ट खाद्य वस्तु देखकर मुहं में लार बनने लगना, कभी केवल सूघने व् सुनने मात्र से ही अमुक वस्तु खाने की इच्छा उत्पन्न हो जाना, यह सिद्ध करता है कि यद्यपि आँख, कान, नाँक पाचन प्रणाली के अंग नहीं हैं फिर भी किसी न किसी विधि से उससे उत्साहित तो होते ही हैं। स्पर्श अथवा त्वचा का भी पाचन और प्रजनन संस्थानों से किसी प्रकार सम्बन्ध तो है ही, सब जानते है।

मुहं में जिव्हा से लेकर आखिर में मलद्वार तक संस्थान तो एक ही है और उसको निर्मित करनेवाली मांसपेशियां व् ऊतक भी समान न होकर भिन्नता होने से सब के कार्य अलग अलग कैसे निर्मित हुये? पाचन प्रणाली में बड़ी आंत (कोलोन) का पाचन में कोई योगदान नहीं फिर भी वहां अनेक प्रकार के लाभदायक जीवाणु पनपते रहते हैं जो आहार में मौजूद फाइबर को किण्वित (फरमेंट) कर कुछ अम्ल पैदा करते हैं। वे आहार के कैल्शियम आदि खनिजों को घुलनशील बना कर अवशोषित करने लायक बना देते हैं। कहाँ से आते हैं ये जीवाणु रहस्य ही है।

इन दो संस्थानों के अतिरिक्त मानव शरीर के विसर्जन संस्थान, हृदय और रक्त संचरण संसथान, मष्तिष्क व् नाडी संस्थान अन्य प्रमुख प्रणालियाँ भी हैं। पैर की अंगुली में काँटा या सुई चुभने से उसकी खबर मष्तिष्क को सेकंड के सूक्ष्तम समय में पता हो जाती है और फलस्वरूप शरीर तत्काल प्रतिक्रिया कर तुरंत पैर हटा लेता है। शरीर के भीतर की संचार प्रणाली इतनी सशक्त और गतिशील कि कल्पना से परे। यह विषय नर्वस सिस्टम के अंतर्गत आता है।

उपरोक्त वर्णित सभी उपक्रम छोटे से छोटे जीव, पशु, पक्षी, कीट, आदि में भी ये सभी प्रणालियां विध्यमान होती हैं। मानव मस्तिष्क भी एक अजूबा अंग है, इसमें आठ भाग होते हैं जिनके कार्य, खाने, बोलने, सुनने, देखने, सूंघने और स्पर्श अनुभव करने के होते हैं। इनके अलावा किसी भी बात अथवा घटना की याद वर्षो संजोये रखना भी एक अजूबा है इस याद को आवश्यकता होने पर रिकॉल भी किया जा सकता है। भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली में मैंने एक बार लगभग 50 वर्ष पूर्व बंदरों के मष्तिष्क के कार्यों पर अनुसन्धान होते देखा था। जिनके खोपडी में जगह जगह इलेक्ट्रोड लगे थे। खीरा के टुकडे डालते ही बंदर दोनों हाथ से खीरा उठाकर खाना शुरू का देते और उनके मष्तिष्क का एक निर्धारित इलेक्ट्रोड जब स्विच ऑफ करते, बंदर खाना भूल जाता, खीरा हाथ में पकडे ही हाथ मुहं तक न जाकर बीच में ही रुक जाता। पुनः इलेक्ट्रोड ऑन करते ही बंदर खाना फिर शुरू कर देता। इस प्रकार के अनेक अनुसन्धान एम्स में होते रहते हैं।

अभी शरीर की अनेक जटिलतायें रहस्य बनी हुई हैं। सबसे विलक्षण काम आत्मा का शरीर में प्रवेश कराना है जो विज्ञान के लिए दूर की कौडी ही नहीं असंभव भी है। मानव को सदैव प्रकृति से निकटता बनाकर रखना श्रेयकर रहता है। साथ ही आध्यात्म की रहस्यमयी क्रियायें और उनके शरीर में दृष्टिगोचर होते प्रभाव की गुत्थी भी अभी तक नहीं सुलझ सकी है। जब तक ऐसे सभी रहस्यों से पर्दा उठे तब तक विचार करते रहिये और शरीर रचनाकार का आभार जताते रहिये, वही सबका मालिक कभी मानव को शायद सक्षम बनाये कि कुछ और रहस्यों को उद्घाटित किया जा सके? मुझे आप जैसे लोगों से प्राप्त टिप्पणियां एक अच्छा अवसर प्रदान करती हैं।

प्रो. डॉ. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ
एमपीयूएटी , उदयपुर

उम्मेद भवन पैलेस टीम ने जीता पोलो कप फाइनल

> ■ **टीम के ध्रुवपाल गोदारा ने किए दस गोल**
>
> ■ **विपक्षी मेयो कॉलेज टीम के योगेश्वर सिंह व पेपसिंह ने भी किया शानदार प्रदर्शन**

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के तत्वावधान में महाराजा गजसिंह स्पोर्ट्स फाउण्डेशन पोलो मैदान, एयरफोर्स रोड, पाबूपुरा में चल रहे 23वें जोधपुर पोलो सीजन 2022 में शुक्रवार को उम्मेद भवन पैलेस कप अरीना पोलो (4 गोल) टूर्नामेंट का फाइनल उम्मेद भवन पैलेस व मेयो कॉलेज के बीच दोपहर 3.30 बजे खेला गया।

उम्मेद भवन पैलेस होटल के जनरल मैनेजर एवं मुख्य अतिथि मनु शर्मा ने विजेता खिलाडियों को कप व ट्रॉफियां प्रदान की।

समान हैण्डीकेप की दोनों ही टीमों के खिलाडियों ने इस मैच में शानदार खेल का प्रदर्शन किया। उम्मेद भवन पैलेस टीम ने विपक्षी टीम मेयो कॉलेज को नौ के मुकाबले तेरह गोल कर चार गोल के अन्तर से हराते हुए कप जीत लिया। मैच के दौरान उम्मेद भवन पैलेस होटल के जनरल मैनेजर मनु शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में मैदान में उपस्थित थे जिन्होंने गेंद फेंककर खेल शुरु करवाया व मैच समाप्ति पर विजेता खिलाडियों को कप व ट्रॉफियां प्रदान की। मैदान में उपस्थित मेहरानगढ बैण्ड और 1 मैक आईएनएफ (1 मद्रास) पाईपर एण्ड ड्रम बैण्ड ने मैच से पूर्व व मैच के दौरान अपनी सुमधुर सुर लहरियों से अपनी बेहतरीन कला का प्रदर्शन किया।

जोधपुर पोलो एवं इस्क्स्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के सचिव जंगजीत सिंह ने बताया कि उम्मेद भवन पैलेस टीम की ओर से खेलते हुए टीम के अनुभवी खिलाडी तीन हैण्डीकेप के ध्रुवपाल गोदारा ने मैच की शुरुआत से ही विपक्षी टीम पर दबाव बनाते हुए कुल दस गोल किए। गोदारा ने पहले व चौथे चक्कर में एक–एक गोल व दूसरे व तीसरे चक्कर में चार–चार गोल किए। टीम में उनके साथ खेल रहे युवा खिलाडी साविर मेहराज गोदारा, जो कि ध्रुवपाल गोदारा के ही पुत्र हैं, ने भी पहले चक्कर में दो व दूसरे चक्कर में एक गोल किया। मुकाबले में मेयो कॉलेज के योगेश्वर सिंह ने पहले चक्कर में एक व दूसरे व तीसरे चक्कर में दो–दो गोल किए। पेपसिंह भलासरिया ने पहले व तीसरे चक्कर में एक–एक गोल व चौथे चक्कर में दो गोल किए।

कम पानी में कारगर है जोजोबा की खेती

> ■ **परम्परागत फसलों की तुलना में कम खर्च**
>
> ■ **पौधा दो से 55 डिग्री तापमान सह सकने में सक्षम**
>
> ■ **जोजोबा के बीज से 45 से 55 प्रतिशत तक तेल मिलता है**
>
> ■ **सरकार भी इसकी खेती को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान देती है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। किसान करणवीर सिंह जोजोबा की खेती से चार बीघा में 10 से 12 क्विंटल तक पैदावार ले रहे हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। पानी की कमी वाले क्षेत्रों में जोजोबा की खेती कारगर सिद्ध हो रही है। परम्परागत खेती की तुलना में किसानों को अधिक लाभ मिलता है। जोजोबा का पौधा दो से 55 डिग्री तापमान सह सकता है। किसान को पांचवें साल में फल मिलता है। जहां पानी रुकता है, वहां जोजोबा का पौधा विकसित नहीं हो पाता। एक नर के अनुपात में 10 मादा पौधे लगाए जाते हैं।

3 से 5 मीटर तक की ऊंचाई वाले इस पौधे की आयु 200 वर्ष होती है। यह सदाबहार पौधा है जो बहुत ही धीमी गति से विकास करता है। इसके बीज में 45 से 55 प्रतिशत तक तेल मिलता है। जोजोबा का तेल अत्यधिक गुणवतापूर्ण होता है। जोजोबा के तेल का उपयोग सौंदर्य प्रसाधन बनाने में होता है। तेल निकालने के बाद बचे मैटीरियल को सल्फर से ट्रीट करने पर ल्यूब्रिकेंट बनता है। जिसका उपयोग मशीनों व हवाई जहाज में होता है। राजस्थान जोजोबा के कुल उत्पादन का 80 से 90 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। सरकार भी इसकी खेती को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान देती है जो कि 45 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर है। किसान ने वर्ष 2006 में इसकी शुरुआत की थी। पांच वर्ष बाद पौधों में फल लगने की शुरुआत हुई। शुरुआती दो सालों तक पैदावार कम रही। पौधों के परिपक्व होने पर पैदावार भी बढ़ रही है।

जयसमंद अभयारण्य में जल्द शुरू होगी जीप सफारी

उदयपुर, (कासं)। जयसमंद वन्यजीव अभयारण्य में पर्यटक अब शीघ्र ही जीप सफारी का लुत्फ उठा सकेंगे। इससे न सिर्फ जयसमंद अभयारण्य के आस–पास निवासरत लोगों को रोजगार के नए अवसर मिल सकेंगे बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी हो सकेगा।

शुक्रवार को सीसीएफ आर. के. खैरवा ने वाहन मालिकों, होटल एसोसिएशन एवं पर्यावरण प्रेमियों की एक महत्वपूर्ण बैठक वन भवन परिसर स्थित सभागार में लेकर समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने जीप सफारी के लिए सरकार द्वारा तय किए गए नियमों की सभी को विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वाहन का फॉर बाय फॉर होना अनिवार्य है। इसके अलावा वाहन पेट्रोल, सीएनजी अथवा इलेक्ट्रिक होना चाहिए एवं डीजल वाहन किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किए जाएंगे। फिलहाल अधिकतम 64 वाहन जीप सफारी के लिए लगाए जाएंगे एवं वाहनों की बुकिंग के लिए ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध होगी। सीसीएफ ने सभी पदाधिकारियों से जयसमंद जीप सफारी के लिए अनुमानित दर पूछी और प्रस्ताव बनाया। उन्होंने यह भी बताया कि जीप सफारी के लिए गाइड्स की ट्रेनिंग का कार्य भी किया जाएगा।

कक्षा 4 व 5 के विद्यार्थियों को नहीं आता हिंदी की किताब पढ़ना

> ■ **पांचवीं बच्चे भी नहीं सुना पाए 10 तक के पहाड़े**
>
> ■ **45 में से 23 विद्यार्थी मिले उपस्थित, 2:15 बजे तक भी उपस्थिति रजिस्टर में नहीं दर्शाई**

मसूदा, (निसं)। मसूदा ब्लॉक का मुख्य शिक्षा अधिकारी क्षेत्र अधीन 2 विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को हिंदी की किताब पढ़ना नहीं आना एवं 10 तक के पहाड़े नहीं आने सहित विभिन्न प्रकार की व्याप्त अनियमितताओं को देखते हुए इन विद्यालयों में किस प्रकार की पढ़ाई होती होगी इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

उपखंड अधिकारी डॉ.संजू मीणा द्वारा शुक्रवार को संबंधित विद्यालयों के किए गए निरीक्षण के दौरान इस प्रकार की अनियमितताएं सामने आई। उपखंड अधिकारी डॉ. संजू मीणा ने शुक्रवार को रा.प्रा. विद्यालय डांगेश्वर कॉलोनी, मसूदा एवं राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेबारियों की ढ ाणी, मसूदा का औचक निरीक्षण किया। उपखंड अधिकारी द्वारा किए गए औचक निरीक्षण के दौरान रा.प्रा. विद्यालय डांगेश्वर कॉलोनी, मसूदा में विद्यार्थी अव्यवस्थित ढंग से तथा झुण्ड में बैठे मिले। उपखंड अधिकारी डॉ संजीव मीणा द्वारा विद्यार्थियों का अध्ययन स्तर जांचने पर कक्षा 4 व 5 का अध्ययन स्तर जाँचने पर छात्र एवं छात्राओं को हिन्दी की किताब नहीं पढ़ना सामने आया साथ ही विद्यार्थियों को 1 से 10 के पहाड़े भी सही ढंग नहीं से बोल पाए।

छात्रों का नामांकन जांच करने पर भी कुल 45 में से 23 छात्र–छात्राएं उपस्थित पाये गये। इसी प्रकार रा.प्रा. विद्यालय रेबारियों की ढ ाणी मसूदा में विद्यार्थी अव्यवस्थित ढ ंग से तथा झुण्ड में बाहर घूमते पाए गए वही अध्यापक का कक्षा कक्ष में अकेले बैठे होना पाया गया। निरीक्षण समय दोपहर 2:15 बजे तक विद्यार्थियों की भी विद्यार्थियों की उपस्थिति पंजिका में उपस्थिति में दर्ज नहीं किए जाने जैसी अनियमितताएं मिली।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 10 दिसम्बर, 2022

पौष मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, आर्द्रा नक्षत्र सांय 5:42 तक, शुक्ल योग रात्रि 4:25 तक, गर करण दिन 3:47 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–वृष, बुध–धनु, गुरू–मीन, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवि पुष्य योग रात्रि 8:36 से सूर्योदय तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 8:36 से आरम्भ होगा। आज भद्रा रात्रि 3:01 से रविवार सांय 4:15 तक रहेगी।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:36 से 9:44 तक, चर 12:14 से 1:37 तक, लाभ–अमृत 1:37 से 4:12 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 5:30

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में परिजनों से सहयोग मिलेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटके हुए कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना राहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक–मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।